Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Oct-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

'मीराँ की पदावली' का चयन की दृष्टि से अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

'मीराँ की पदावली' का चयन की दृष्टि से अध्ययन

Dr. Sarita Batra

S.M.S. Khalsa Labana Girls College, Barara (Ambala)

----------X----------

शोधार्थी/अन्वेषक किसी भी साहित्यकार के लेखन पर विभिन्न दृष्टियों से अध्ययन करते हैं। सगुणोपासक मीरा भक्तिकाल की महान् कवयित्री मानी जाती है। मीरा की पदावली का गहन अध्ययन कर मैंने अपने शोध–पत्र का विषय 'चयन' को लिया है, जो शैलीविज्ञान का एक तत्त्व है। चयन से अभिप्राय है–चुनना। अर्थात् एकाधिक में से किसी एक को चुन लेना। शैलीविज्ञान के संदर्भ में इस शब्द का अर्थ है–अपनी अभिव्यक्ति के लिए किसी भाषा में प्राप्त एकाधिक विकल्पों में से किसी एक को चुनना। डॉ. सुरेश कुमार के अनुसार–"चयन अभिव्यक्ति के प्रसंग तथा उद्देश्य के अनुरूप उपलब्ध भाषागत विकल्पों में से उपयुक्त का चयन है।"1 डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार–"किसी भाषा में प्राप्त एकाधिक इकाईयों या व्यवस्थाओं में से अपनी अभिव्यक्ति के लिए किसी एक को चुनना।"2 डॉ. नगेन्द्र के अनुसार–"उचित शब्दों का चयन आवश्यक है, किन्तु पर्याप्त नहीं। सुन्दरतम शब्दों का क्रम बंधन भी सुन्दरतम होना चाहिए, तभी कला का रूप पूर्ण होता है। यह सुन्दर–विन्यास अनेक तत्त्वों पर आधृत होता है जिसमें वर्ण–साम्य रूप–साम्य के अतिरिक्त वैषम्य तथा साम्य वैषम्य की विविध संयोजनाओं का भी विशेष योगदान रहता है।"3 कुन्तक के अनुसार–"अनेक पर्यायवाची शब्दों के होते हुए भी उन सबकी अपेक्षा विलक्षण अर्थ का वाचक एक ही शब्द हो सकता है।"4

काव्य भाषा में शब्द चयन महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि शब्द, भावों को अभिव्यक्ति करते हैं। उचित एवं सजग शब्दों के चयन से काव्य भाषा में सजीवता एवं मधुरता आ जाती है। डॉ. नगेन्द्र चयन की प्रक्रिया में शब्द उपन्यास के महत्त्व को बताते हुए कहते हैं– "उचित शब्दों का चयन आवश्यक है, किन्तु पर्याप्त नहीं। सुन्दरतम् शब्दों का क्रम भी सुन्दर होना चाहिए, तभी कला का रूप पूर्ण होता है।"5 मीरा के काव्य में शब्द–चेतना के कई रूप मिलते हैं। उनके शब्द अर्थ गांभीर्य एवं चित्रमयता से परिपूर्ण है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"सुन्दरीय श्याम शरीर, मारे दील सुन्दरीय श्याम शरीर ।।0।।

कोई न भाव भवानी उपर, कोइने वाला पीर ।।1।।

गांगा रे कोइने ने जमना रे कोइने, कोइने अड़सठ तीर।।2।।

कोइने रे हस्ती कोइने रे घोड़ा, कोइने ते महोल मंदीर।।3।।"6

उपर्युक्त उदाहरण में मीराँ ने शब्द–चयन पर अपनी लेखनी चलाई है। इनके शब्द स्वयं में पूर्ण हैं। मीराँ ने अपने शब्दों के माध्यम से श्याम सलोने के सुंदर शरीर का वर्णन किया है।

मीराँ जी की पदावली में ध्वनि–चयन का विशेष महत्त्व है। श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति के लिए इन्होंने कोमलकान्त पदावली का चयन किया है। जैसे–

"ऐसे पियै जान न दीजै हो।।0।।

चलो, री सखी! मिली राखिये नैननि रस पीजै, हो।

श्याम सलोनो साँवरो, मुख देखत जीजै, हो।।1।।"7

इन पंक्तियों में श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति के अनुरूप ध्वनियों का चयन किया गया है। श्रृंगार रस का ऐसा अनुपम वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है।

जहाँ ध्वनि से ही अर्थ ध्वनित या व्यंजित हो जाए वहाँ ध्वन्यात्मक सौन्दर्य माना जाता है। उनके द्वारा प्रयुक्त निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ने से पता चलता है कि इसमें उन्होंने वर्षा ऋतु का मनमोहक चित्र प्रस्तुत किया है।

"घुमड़ घुमड़ होय आई रे बदलियाँ, पवन चले झकझोरा रे

काली सी घटा में बिजलियाँ चमक, झीणी–झीणी पड़त फुंवारें।।"8

यहाँ पर 'घुमड़–घुमड़' तथा 'झीणी–झीणी' में ध्वन्यात्मक सौन्दर्य निहित है। इससे एक विशेष ध्वनि का बोध होता है।

तत्सम् शब्दों के अंतर्गत प्रचलित एवं अप्रचलित दोनों प्रकार के शब्द मीराँ की पदावली में प्रयुक्त हुए हैं। मीराँ द्वारा प्रयुक्त तत्सम् शब्दों में भावानुकूलता, सहजता, सम्प्रेषणीयता, आत्मीकता आदि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

"मेरे तो गिरधर, गोपाल, दूसरो न कोई।।0।।

जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई।

तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।।1।।"9

प्रस्तुत उदाहरण में मीराँ के शब्द ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे उनके शब्द जीवन्त हो उठे हों।

मीराँबाई की पदावली में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली होते हुए भी क्लिष्टता कहीं भी नजर नहीं आती। पाठकों को तत्सम् पदावली सहज ही ग्राह्य हो जाती है। मीराँ जी ने जहाँ एक ओर तद्भव

www.ignited.in

शब्दों द्वारा भाषा को सहज एवं स्वाभाविक बनाया है वहाँ तद्भव शब्दों से भाषा में रमणीयता भी आई है–

"रैण यहीं रह जाओ चंदा जी,

केजा म्हारा पिया जी की बात।।0।।

कनक कटोरा में ज़हर जो भरीयो,

तुम्हारे हाथ पीला जाओ।।2।।"10

तद्भव शब्दों की ऐसी झलक कहीं और देखने को नहीं मिल सकती।

जनमानस में भावों के आदान–प्रदान के लिए प्रयुक्त भाषा में बहुत से ऐसे शब्द प्रचलित रहते हैं, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता है, इस प्रकार के शब्दों को देशज शब्द कहते हैं। मीराँ जी ने अपनी पदावली में अनेक स्थानों पर देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"श्याम बिन कौन पढ़े मोरी पाती?

श्याम बिना मेरो घर अंधियारो, दीपक चुग गई बाती।।0।।

असुँअन नैनन ज्योति बहाई, कारी–धौरी एक बनाई,

चिंता चाह लगन सब छूटी, पाथर भई मोरी छाती।।2।।"11

यहाँ पर कवयित्री ने चुग, कारी–धौरी जैसे देशज शब्दों का प्रयोग किया है। जिस प्रकार तद्भव एवं देशज शब्द स्वाभाविक रूप में प्रयुक्त हुए हैं। उसी प्रकार विदेशी शब्द भी जन जीवन से सम्बन्धित प्रतिपाद्य के अनुकूल भाषा निर्माण के लिए स्वाभाविक रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

आचार्य शुक्ल के अनुसार–"शब्द जब व्याकरणिक योग्यता प्राप्त कर लेते हैं तो उन्हें पद कहा जाता है।"12 पद–चयन से अभिप्राय है–वर्ण्य विषय के अनुसार पद प्रयोग अर्थात् अनुकूल पदों का प्रयोग ही पद–चयन है। जो पद व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम का बोध कराएँ वह संज्ञा पद कहलाता है। इन पदों का विषय के अनुसार चयन संज्ञा पद चयन कहलाता है। जैसे–

"गोपाल राधे कृष्ण गोविंद गोविंद।।0।।

बाजत झाँझरी और मृदंग, और बाजे करताल।।2।।

मोर मुकुट पीतांबर सोहै, गल बैजन्ती माला।।2।।

मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, भक्तन के प्रतिपाल।।3।।"13

पद चयन के अंतर्गत मीराँ ने अपने काव्य में संज्ञा पद चयन के माध्यम से अनेक उद्धरण प्रस्तुत किए हैं।

मीराँ ने अपने काव्य में विशेषण पद चयन का भी वर्णन किया है। इन्होंने विशेषण पदों का वर्ण्य विषय के अनुकूल चयन किया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"बादल होय बुहा जाओ।।3।।

मीराँ के प्रभु गिरधर नागर।

तन की तपन बुझा जाओ।।4।।"14

मीराँबाई ने अपनी पदावली में विशेषण के द्वारा पद चयन किया है जो काफी सीमा तक सार्थक जान पड़ता है।

क्रिया पद चयन से सम्बन्धित अनेक उदाहरण मीराँ जी के काव्य में देखने को मिलते हैं। इस दृष्टि से मीराँ जी का कौशल अनेक स्थलों पर देखा जा सकता है।

"माई म्हारी हरिजी न बूझी बात।

पिंड मांसूँ प्राण पापी निकस क्यूँ नहीं जात।।0।।

पट न खोल्या मुखाँ न बोल्या, साँझ भई परभात।

अबोलणा जुग बीतण लागो, तो काहे की कुसलात।।2।।

सुपन में हरि दरस दीन्हों मैं म जाणयूँ हरि जात।"15

क्रिया विशेषण पद चयन के माध्यम से मीराँ ने अपने काव्य की शोभा को और भी अधिक बढ़ा लिया है। इससे भाषा में सौन्दर्य की वृद्धि होती है। जैसे–

"रोम रोम अर्पण है थाँके सुण लीज्यो घनश्याम

थांका मुखड़ा ऊपर जाऊँ बलिहार।।3।।

सांवरि सूरत मन में बसी जी घुंघर वाले केश।।"16

प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण की 'साँवरि सूरति' क्रिया विशेषण से युक्त है।

मीराँ जी ने अपनी पदावली में आज्ञा के रूप में, भाववाचक संज्ञा के रूप में, विशेषण के रूप में, भाषा के मानक अमानक रूप में विभिन्न प्रकार के रूपों का चयन किया है। इनके काव्य में भाववाचक संज्ञा का एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"बाला मैं बेरागण हूँगी।

जिन भेषाँ म्हारो साहिब रीझे, सोही भोष धरूँगी।।0।।

सील संतोष धरूँ घट भीरत, समत पकड़ रहूँगी।

जाको नाम निरंजन कहिये, ताको ध्यान धरूँगी।।2।।"17

रूप चयन के अन्तर्गत मीराँ जी ने विशेषण के रूपों में भी बहुत सुन्दर प्रयोग किए हैं। जैसे–

"सासु हमारी सुषुम्णा रे, ससरो प्रेम संतोष रे।

जेठ जुगो जुग जीवजो रे, हारे पेलो नावलीयो निर्दोष।।2।।

ओढूं तो नवरंग चुंदड़ी रे, नहि ओढुं कांबल लगार रे।

ओढूं प्रेम इस चुंदड़ी रे, हारे मारां पाप निवारण करनार।।3।।"18

www.ignited.in

रूप चयन का ऐसा सार्थक उदाहरण अन्य काव्यों में इतना अधिक मुखरित नहीं हुआ, जैसा कि मीराँ के काव्य में हुआ है। औपचारिक और अनौपचारिक दृष्टि से कई बार शब्दों का रूप आज्ञार्थक भी प्रतीत होता है। जैसे–

"माई कहै सुन धीहड़ी, कहै गुण फूली।

लोक सौवे सुख नींदड़ी, यूँ क्यूँ रैणजी शूली।।0।।

गेली दुनियाँ बावली, ज्याँकूँ राम न भावै।

ज्याँ के हिरदे हरि बसे, त्यों कूँ नींद न आवे।।2।।"19

उपर्युक्त उदाहरण में माँ बेटी को आज्ञा दे रही है कि सब लोग तो सुख की नींद सोते हैं और तू अपनी रात यूँ ही बिता देती है। इसलिए यहाँ आज्ञा के रूप में चयन किया गया है। कवयित्री ने यहाँ माँ–बेटी के माध्यम से अपने आज्ञावाचक शब्दों का प्रयोग किया है।

कवि या लेखक, मानक या अमानक रूपों में चयन करना पसंद करते हैं। भोलानाथ तिवारी के अनुसार–"ताजगी, आकर्षण, ग्रामीणता आदि के लिए अमानक रूप चुने जाते हैं। ये अमानक रूप या तो ग्रामीण बोलियों के होते हें या मध्यकालीन हिंदी भाषा में।"20 मीराँ जी ने कुछ मानक अमानक रूपों का चयन किया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"हमरे रोये लागलि कैसे छूटै।।0।।

जैसे हीरा हनत निहाई, तैसे हम रौरे बनि आई।।2।।

जैसे सोना मितल सोहागा, तैसे हम रौरे दिल लागा।।2।।

जैसे कमल नाल विच पानी, तैसे हम रौरे मन मानी।।3।।"21

प्रस्तुत उदाहरण में मीराँ जी ने अपनी पदावली में मानक और अमानक रूपों का प्रयोग कर अपने काव्य की सुन्दरता को और अधिक बढ़ा लिया है।

साहित्यकार भावों की अभिव्यक्ति करते समय समास वाले रूपों का या असमासी रूपों में भी चयन करता है। मीराँ की पदावली का अध्ययन करने पर कहा जा सकता है कि उन्होंने समस्त पदों तथा असमस्त पदों दोनों का ही चयन किया गया है। जैसे–

"ज्यांरा चित–चरणां से लगा, वेही सबेरे जागा।।0।।

पहले भूप भरतरी जागा, शहर उजीणी त्यागा।

सुणं सुणं वचन साहब सतगुरु का, गोपीचंद उठ भागा।।2।।"22

उपर्युक्त उदाहरण में असमस्त पद का चयन किया गया है।

वाक्य चयन के अन्तर्गत सरल या साधारण वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्यों का प्रयोग किया है। मीराँ की पदावली में सरल वाक्यों का भी प्रयोग हुआ है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"चंदन की तिलक तुलसी की माला,

भजुं रघुपति मैं भजुं नंदलाला।।0।।

और कोई नहीं जाणु देवा, रामकृष्ण बिन निष्फल सेवा।।2।।

लोक कहे मीराँ क्या जाणे, मीराँ का मरम श्रीराम पीछाने।।2।।"23

संयुक्त वाक्य का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

"हम परदेशी पंछी लोक बाहार नहीं आवेंगे।।0।।

मात पिता हु दोष न दीजे, कर्म लिखा सो पावेंगे।।2।।"24

मीराँ की पदावली में मिश्र वाक्य का उदाहरण दृष्टव्य है–

"नारद मुनी है बडबीरो, म्हाने ग्यान की चुनड़िया ओढ़ाई ए माए।।2।।

शिव सनकादिक दोई मामा, म्हाने ध्यान को मोंसालो पेराए ए माए।।3।।

अमरलोग में बाजा बाजा, म्हारी मीराँबाई परण पधारया ए माय।।4।।"25

जिस वाक्य में किसी बात या कार्य का न होना पाया जाए वह निषेधात्मक वाक्य कहलाता है।

मीराँ के काव्य में निषेधात्मक वाक्यों को यत्र–तत्र देखा जा सकता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

"सोनाना दोरा तारा, काम नहिं आवे राणा।

तुलतीनी मालाधाली लईशुं, राणाराज।।2।।

हीरना चीर तारां, काम नहिं आवे राणा।

भगवा वे वस्त्र पहेरी लईशुं, राणा राज।।2।।"26

इसमें किसी बात या कार्य के लिए आज्ञा या उपदेश देना प्रकट होता है। आज्ञाबोधक वाक्यों में क्रिया ही प्रमुख होती है। मीराँ ने अपने काव्य में आज्ञाबोधक वाक्यों का प्रयोग किया है। जैसे–

"कहन लगे मोहन मैया मैया।।0।।

नंदराय से बाबा बाबा बलदाऊ से भैया।।2।।

दूर खेलना मत जावो प्यारे ललना, मारेगी काहू की गैया।।2।।"27

इसमें श्रीकृष्ण को आज्ञा दी गई है कि वो बाहर खेलने के लिए न जाए। इस प्रकार के उद्धरणों ने मीराँ के काव्य में निहित सौन्दर्य को स्पष्ट किया है।

अपने पदों के अंतर्गत मीराँ ने इच्छा, कामना और अभिलाषा से संबंधित वाक्यों का प्रयोग किया है। आज्ञाबोधक वाक्यों की

भाँति इच्छा–बोधक वाक्यों में भी क्रिया प्रमुख होती है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"आओ जी घनश्याम म्हारे, माखन मिश्री खावा ने।।0।।

थें आजो पिया, संग मत लाजो, नहीं छे दधि लुटावा ने।।2।।

एक जांवणी दही जमाँवू प्रभुजी के भोग लगावा ने।।2।।"28

इस प्रकार के अनेक पद मीराँ के काव्य में समाहित हैं।

प्रश्नबोधक वाक्य व्याकरण सम्मत है, किन्तु इनमें भावों की अभिव्यक्ति विविध स्वरूपों में हुई है। इन वाक्यों में कहीं जिज्ञासा, कहीं विवशता कहीं संवेदना और कहीं आक्रोश प्रकट होता है। जैसे–

"कृष्ण मेरी नजर के आगे ठाडे रहो रे।।0।।

मैं जो बुरी श्याम अवर भली है।

भली कि बुरी मेरे दिल रहो रे।।2।।

प्रीत को पैंडो बहुत कठिन है।

चार कही दशअवर कहो रे।।2।।"29

भक्तिकालीन सगुण धारा की उपासक कवयित्री मीराँ के काव्य में जिज्ञासा, विवशता, संवेदना तथा आक्रोश ऐसे सार्थक उदाहरण मिलते हैं जो कि अन्यत्र दुर्लभ हैं।

विस्मय, हर्ष, शोक आदि भावों को अभिव्यक्ति करने के लिए इन वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। एक हर्ष का उदाहरण इस प्रकार है–

"म्हारे घर आवोजी राम रसिया।

धारी साँवरि सुरत मन बसिया।।0।।

धुडला जीण करावो मन मोहन।

बखतर खासा कसिया।।2।।"30

"काव्य–भाषा का प्रयोक्ता अर्थ–चयन इस दृष्टि से करता है कि वह अपनी बात अभिधार्थ द्वारा कहे अथवा लक्षणार्थ द्वारा या व्यंग्यार्थ द्वारा।" अभिधा का सौन्दर्य स्वाभावोक्ति के आश्रय में पनपता है अर्थात् अभिधा का सौन्दर्य स्वाभाविक चित्रण में होता है। जैसे–

"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।।0।।

जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई।

तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।।2।।

छांडि दई कुल की कानि, कहा करि है कोई।

संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।।2।।"31

इस उदाहरण में अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग किया गया है। शब्द–शक्तियों के माध्यम से मीराँ के काव्य की सुंदरता अत्यन्त शोभायमान हो गई है।

इनकी पदावली में लक्षणा शब्द शक्ति के विविध प्रयोग देखने को मिलते हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"अब तुम देखो माई सांवण दुलोबण आयो।।0।।

हरि हरि भूमिका हरया ही पंछी, हरि हरि अम्बुला की डारा।।2।।

हरि हरया बाग ने हरिया दुपटा, हरयो राधे रानी जी रो नेह।।2।।

बाई मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल बलिहार।।3।।"32

व्यंग्यार्थ का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

"सावण दे रह्यो जोरा, घर आवोजी स्याम मोरा।।0।।

उमड़ घुमड़ चहुँ दिसि से आया, गरजत है घनघोरा।।2।।

दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही शोरा।।2।।

मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, जो वारूँ सोई थोरा।।3।।"33

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मीराँ की काव्य–भाषा चयन की दृष्टि से एक विशिष्ट महत्त्व रखती है। उनकी भाषा में चयन में विविध आयाम मिलते हैं। वस्तुतः उनकी भाषा में ध्वन्यात्मकता, चित्रात्मकता, संगीतात्मकता इत्यादि गुण विद्यमान है। उनका शब्द–चयन प्रासंगिक एवं उचित है। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली भी इनके पदों में अपने मूल रूप में देखी जा सकती है, किन्तु उसमें कहीं भी क्लिष्टता नहीं है। सारांशतः यही कहा जा सकता है कि मीराँ के काव्य में शब्द चेतना के कई रूप मिलते हैं। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली होते हुए भी इनके काव्य में कहीं भी क्लिष्टता नहीं है।